IJAER/ June-July 2012 /Volume-1/Issue-1/Article No-23/136-140 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

महर्षि पतंजलि के शिक्षा दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

Vikas Kumar
Research Scholar
C.M.J.University, Meghalaya

Dr. Kuldeep Kumar
H.O.D
F.I.T. Mawana Road Meerut

प्रस्तावना

शिक्षा देश के भविष्य की नीव है और उसे मजबूत करने में पिछले पचास वर्षों में कोताही हुई है। शिक्षा में सुधार करने का कार्य इतना बड़ा था कि उसको राष्ट्रीय चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं किया गया और उसे जितनी प्राथमिकता मिलनी चाहिये थी, उतनी नहीं मिली। अभी तक हम उस मोह जाल से पूर्णतः नहीं निकल पाए हैं जो लार्ड मैकाले ने एक शताब्दी पूर्व हम पर फेंका था। शिक्षा के क्षेत्र में आज जैसी अराजकता और दिशाहीनता व्याप्त है, वैसी शायद पहले कभी नहीं थी। युद्ध, हिंसा, मूल्यहीनता और भौतिकवादी आँधी से त्रस्त मानवता का उसके विपन्न वर्तमान और अंधकारमय भविष्य में मार्ग निर्देशन के लिए महर्षि पतंजलि का प्रबुद्ध और व्यवहारिक शिक्षा दर्शन आशादीप बन सकता है। इनका शिक्षा दर्शन वर्तमान शिक्षा के दोषों का निवारण करके आदर्श शिक्षा प्रणाली की संरचना में सार्थक योगदान दे सकता है। इनके शैक्षिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इनके विचारों और प्रयोगों को समझा जाये और उन पर अमल किया जाये।

"शिक्षा" शब्द का उद्‌गम संस्कृत की 'शिक्ष' धातु से हुआ है। जिसका अर्थ है 'सीख' या 'सीखना'। शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में ऐजुकेशन कहते हैं जो एक लैटिन भाषा के ऐडुकेटम शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है 'शिक्षित करना'। 'ए' का अर्थ है 'अन्दर से' 'डूको' का अर्थ है 'आगे बढ़ाना' अतएव ऐजुकेशन अथवा शिक्षा का अर्थ है 'आन्तरिक शक्तियों का बाहर की ओर विकास करना', ज्ञान को भीतर ठूँसना नहीं, अतः स्पष्ट है कि शिक्षा कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो बाहर से दी जा सके। शिक्षा तो एक प्रक्रिया है एडीसन महोदय ने शिक्षा को एक क्रिया माना है जिसके द्वारा मनुष्य को अपने में निहित उन शक्तियों तथा गुणों का दिग्दर्शन होता है जिनका शिक्षा के बिना प्रकट होना असम्भव है।"

स्वामी विवेकानन्द शिक्षा को ज्ञान संग्रह नहीं मानते बल्कि वे शिक्षा का अर्थ उस ज्ञानार्जन से लगाते हैं, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक हो अर्थात् जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भाषात्मक एवं आर्थिक विकास में योगदान दे। रविन्द्र नाथ टैगोर ने पूर्ण मनुष्यत्व के विकास की प्रक्रिया को शिक्षा माना है। महात्मा गाँधी जी ने शिक्षा के प्रति विचार प्रकट करते हुए कहा है कि शिक्षा से मेरा अभिप्रायः बालक तथा मनुष्य में अन्तर्निहित शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों के सर्वांगीण विकास से है।

इस प्रकार सभी विद्वानों ने शिक्षा का अर्थ अपनी सूझबूझ, तत्कालीन परिस्थितियों से लिया है। इन सबके आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षा वह सविचार प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के विचार तथा व्यवहार में परिवर्तन होता है..... उसके अपने तथा समाज के कल्याण के लिय। इसमें व्यक्ति, समाज तथा वातावरण सभी के आदर्श सम्मिलित हैं। शिक्षा मनुष्य की उन्नति में मूल साधन के रूप में है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं विकास तथा व्यवहार में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। ये सब शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है।

दर्शन मनुष्य के चिन्तन की उच्चतम सीमा है। इसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एवं मानव जीवन के वास्तविक स्वरूप, सृष्टि–सृष्टा, आत्मा–परमात्मा, जीव–जगत, ज्ञान–अज्ञान, ज्ञान प्राप्त करने के साधन और मनुष्य के करणीय तथा अकरणीय कर्मों का तार्किक अध्ययन किया जाता है। दर्शन आंग्ल भाषा के फिलासफी शब्द का रूपान्तर है जिसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के दो शब्दो 'फिलोस' तथा 'सोफिया' से हुई है फिलोस का अर्थ है प्रेम तथा अनुराग और सोफिया का अर्थ है–ज्ञान। इस प्रकार फिलासफी या दर्शन का शाब्दिक अर्थ ज्ञान अनुराग अथवा ज्ञान का प्रेम है। संस्कृत में दर्शन शब्द 'दृश' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'देखना' 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' अर्थात् जिससे देखा जाये अर्थात् सत्य के दर्शन किये जायें, वह दर्शन है। प्लेटो के अनुसार पदार्थों के सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है।

डॉ0 राधाकृष्णन के अनुसार दर्शन यथार्थता के स्वरूप का तार्किक ज्ञान है। सेलर्स का कहना है कि दर्शनशास्त्र एक ऐसा अनवरत् प्रयत्न है जिसके द्वारा मनुष्य संसार और अपनी प्रकृति के सम्बन्ध में क्रमबद्ध ज्ञान द्वारा एक अन्तदृष्टि

प्राप्त करने की चेष्टा करता है। दर्शन सदैव भौतिक संसार, जीवन–मरण, मन, समाज, ज्ञान, आदर्श तथा मूल आदि के सम्बन्ध में सूझ प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। दर्शन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। उसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और उसकी समस्त वस्तुओं एवं क्रियाओं के वास्तविक स्वरूप की खोज की जाती है। करपात्री महाराज ने लिखा है कि 'दृश्यते वस्तु यायात्म्यं जनेन इति दर्शनम्' अर्थात् प्रमाण द्वारा आत्मानात्मा का ज्ञान जिससे होता है, उसका नाम दर्शनशास्त्र है। दार्शनिक सम्पूर्ण जीवन पर दृष्टि रखता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा के माध्यम से किसी देश की उन्नति सम्भव है। यदि किसी भी देश के इतिहास को जानने की जिज्ञासा है यह शिक्षा के अध्ययन के द्वारा ही सम्भव है। जिस राष्ट्र की जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी, वैसे ही राष्ट्र तथा उसके नागरिक होंगे। भारतीय भूमि ऋषियों व सन्तों की भूमि कही जाती है और उनके विचारा का शिक्षा पर काफी प्रभाव पड़ा है। इन सबके साथ–साथ यह भी सत्य है कि भारत की वर्तमान शिक्षा–प्रणाली अग्रेजों द्वारा आरोपित एक विदेशी शिक्षा प्रणाली है। यह शिक्षा प्रणाली अब तक भी प्रचलित है।

भारतीय शिक्षा को भारत के नव–निर्माण का एक प्रभावी साधन बनाने के लिए शिक्षा का भारतीयकरण किया जाना आवश्यक है तथा इसके लिए उत्तम उपाय यह है कि हमें वेद, पुराण, दर्शन तथा महाकाव्यों के काल से अब तक उपलब्ध साहित्यिक स्रोतों का अध्ययन करके उनके आधार पर शिक्षा के विभिन्न अंगों जैसे–उद्देश्य, शिक्षण–विधि, पाठ्यक्रम तथा इससे सम्बन्धित अन्य तथ्यों का चयन करें। इनके आधार पर भारतीय शिक्षा दर्शन का निर्माण करें। भारतीय शैक्षिक दृष्टिकोण से उपयोगी तथ्यों को स्वीकार किया जाना चाहिए। भारतीय साहित्यिक परम्परा एक महासागर के समान है। इसका शोधन किसी एक शोधार्थी के बूते के बाहर है क्योंकि व्यक्तिशः शोधार्थी किसी कालखण्ड या विचारक को अपने अध्ययन का आधार बना सकता है या दो काल–खण्डों या विचारकों को लेकर उनका तुलनात्मक अध्ययन कर सकता है।

संसार के कल्याण के लिए ऋषि चिन्तक सनातन काल से सदैव तैयार रहे हैं। भारत की विशिष्टता यही है जो पुरातन संस्कृति को भी आज तक समन्वित किए हुए है और अपनी पुरानी ऋषि चिन्तक संस्कृति की विचार ज्योति को आज तक प्रज्जलवित किए हुए है। और भारत की संस्कृति की जड़ों को अपनी साधना से पोषित करते रहे हैं तथा इसकी मूल पहचान को नष्ट होने से बचाते रहे हैं।

वर्तमान युग में शिक्षा के प्रसार के लिये काफी प्रयास किये जा रहे हैं क्योंकि शिक्षा के अभाव में कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता है। अपने देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए आवश्यक है कि उस देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित हो। विश्व में ज्ञान–विज्ञान का प्रसार तीव्र गति से हो रहा है। अतः पश्चिमी और पूर्वी विद्वानों की दार्शनिक विचारधारा पर आधारित शिक्षा–दर्शन का विकास करना आज के युग में महती आवश्यकता है। महर्षि पतंजलि भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक हुए हैं जिन्होंने शिक्षा की व्याख्या योग के माध्यम से पदान की। इस प्रकार पतंजलि तथा अन्य विचारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में शैक्षिक अध्ययन उन व्यक्तियों के लिए मूल्यवान, महत्वपूर्ण एवं उपादेय होंगें जिन्हें वर्तमान अथवा भविष्य में अपने देश अथवा विश्व की शिक्षा व्यवस्था के निर्माण का दायित्व वहन करना है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के महत्व को अलग–अलग रूपों में निम्नलिखित तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है।

शिक्षा और दर्शन में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। महान शिक्षा–शास्त्री दार्शनिक रहे हैं और महान दार्शनिक प्रसिद्ध शिक्षा–शास्त्री ही रहे हैं। जैसा कि जे० एस० रॉस ने कहा है कि दर्शन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पक्ष हैं। इसमें दर्शन, विचारात्मक पक्ष है तो शिक्षा क्रियात्मक पहलू है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि प्रत्येक दार्शनिक का शिक्षा से गहरा सम्बन्ध होता है। दार्शनिक चिन्तक तर्कसंगत होते हुए भी मानवीय होता है। अतः विभिन्न दार्शनिक विभिन्न दष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं। भारतीय विचारकों ने अपने जीवन–दर्शन के अनुरूप शिक्षा पर विभिन्न विचार व्यक्त किये हैं। इन विचारकों ने अपने विचारों को व्यवहारिक रूप प्रदान कर शिक्षा–क्षेत्र में अपना महत्पवूर्ण योगदान दिया है। इन विचारकों की श्रेणी में महर्षि पतंजलि के शिक्षा–शास्त्री के रूप में विचार अमूल्य हैं। महर्षि पतंजलि का योग–दर्शन प्राचीन वैदिक शिक्षा–दर्शन पर आधारित है।

शोध समस्या

"महर्षि पतंजलि के शिक्षा दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य

मानव के जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्ति हेतु उस क्षेत्र से सम्बन्धित उद्देश्यों का निर्धारण कार्य को सुगम बना देता है। उद्देश्यों के पूर्व निर्धारण से मानव को एक निश्चित दिशा मिलती है।

शोध के उद्देश्यों को निम्न प्रकार अंकित कर सकते हैं–

1. महर्षि पतंजलि की तत्व मीमांसा के आधार पर, प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तरीय शिक्षा के उद्देश्यों एवं शिक्षा के अर्थ व सम्प्रत्यय का निर्धारण।

2. महर्षि पतंजलि की ज्ञान मीमांसा के आधार पर प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तरीय शिक्षण विधियों एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का निर्धारण करना।

परिकल्पना

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में महर्षि पतंजलि का शिक्षा दर्शन उपयोगी है।

अध्ययन का महत्व

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इस विषय पर अध्ययन करना आवश्यक है कि प्राचीनकाल में शिक्षा व्यवस्था कैसी थी? क्या स्वरूप था? दर्शन का प्रभाव कितना था? महापुरूषों, विचारकों और मनीषियों का चिन्तन–मनन राष्ट्र की अक्षय निधि होती है। उनका समस्त जीवन एवं कार्य राष्ट्रीय एकता तथा जनकल्याण के लिए होता है। महर्षि पतंजलि अपने समय के महान दार्शनिक व रचनाकार थे उन्होंने योग दर्शन व व्याकरण की रचना की थी जिनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं।

महर्षि पतंजलि ने शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा और दर्शन में योग का अत्यधिक महत्व बतलाया है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जो बालक व व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति, शारीरिक उन्नति और मानसिक स्वास्थ्य में सहायता प्रदान करे और बालक व व्यक्ति को एक जिम्मेदार नागरिक बनाए। इस प्रकार महर्षि पतंजलि के व्यक्तित्व, कृतित्व उनके योग दर्शन व शैक्षिक विचारों के अध्ययन से राष्ट्रवासियों तथा विद्यार्थियों को इस दिशा में कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

आज के भौतिकवादी युग में मानव ने अपनी व्यस्ताओं के कारण अपनी मानसिक शान्ति, परस्पर सहयोग की भावना तथा एकाग्रता को खो दिया है। प्राचीन काल से ही भारत देश धार्मिक भावना से ओत–प्रोत रहा है। ऐसे समय में धार्मिक व आध्यात्मिक विचारों को लिए महर्षि पतंजलि के दार्शनिक विचारों का जनकल्याण की भावना से प्रेरित होकर अधूरी धर्म व योग शिक्षा को पूर्ण करने का प्रयास किया है। क्योंकि आधुनिक युग में जीवन मूल्यों का ह्रास हो रहा है, मानव जाति दुर्दशा के कगार पर है क्योंकि मानव अपनी व्यस्तता के कारण व्यग्रता से घिरा रहता है इसलिए आधुनिक व्यक्ति व बालक को योग की ज्यादा आवश्यकता है इसलिए आज के यग में ऐसी शिक्षा का महत्व बढ़ गया है जो मानव जाति की रक्षा करे, उसके जीवन के शाश्वत् मूल्यों को जीवित रखे। इसलिए हमारे भारत देश के ऋषियों, सन्तों और समाज सुधारकों ने समय–समय पर अपने देश की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। ऐसे ही प्रसिद्ध दार्शनिक व व्याकरणाचार्य महर्षि पतंजलि हुए हैं जिन्होंने हमारी भारतीय शिक्षा को दर्शन, धर्म व आध्यात्मिकता पक्ष से जोड़ा। भारत में दार्शनिक मनन–चिन्तन की अविरल धारा प्रणालियों में बंट जाने पर भी एक ही तारतम्य में अक्षूण्ण अविरल भाव से प्रवाहित होती रही है। महर्षि पतंजलि एक शाश्वत् ज्ञान–प्रहरी व उच्च कोटि के दार्शनिक विचारक के रूप में स्मरणीय है। वर्तमान शिक्षा–पद्धति के सन्दर्भ में इनकी शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन समीचीन हो जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में महर्षि पतंजलि की दार्शनिक विचारधारा का शाधन आवश्यक हो गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तावित अध्ययन के उद्दश्यों की प्राप्ति के लिए दार्शनिक (वर्णनात्मक) विधि का चयन किया गया है। सर्वप्रथम इसमें समस्या का निर्धाण करने के प्श्चात क्रमवार विधि में अध्ययन किया गया है।

शोध सम्बन्धित साहित्य

सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि कृत साहित्य के अन्तर्गत **'महाभाष्य', योगसूत्र अष्टाध्यायी** पर **'भाष्य', योगसूत्र 'अभ्रक विंदास', 'धातुयोग', 'लौहशास्त्र'** आदि प्रमुख बताये गये हैं।

विजय नारायण त्रिपाठी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से **"योग सूत्र एवं चरक संहिता में दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक विचार एक तुलनात्मक अध्ययन" सन् 1980** में एक अध्ययन प्रस्तुत किया।

सन् 1986 में राय एम॰0 के0 शोध प्रबन्ध **"प0 मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन"** शोध–प्रबन्ध पूर्ण किया।

सन् 1990 में श्री अमिताभ शर्मा ने मेरठ विश्वविद्यालय में **"श्रीमद्भगवद्गीता में शिक्षा दर्शन के मूल तत्वों का समालोचनात्मक अध्ययन"** मास्टर ऑफ ऐजुकेशन की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया।

हरिशचन्द्र शर्मा ने **सन् 2002** में चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय से **"सांख्य दर्शन में निहित शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समालोचनात्मक अध्ययन"** पी–एच0डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तुत किया।

इस प्रकार उपरोक्त शाध–अध्ययनों से ज्ञात होता है कि किसी शोध में भी एक रूपता नहीं है। किसी भी शोधार्थी द्वारा **"महर्षि पतंजलि के शिक्षा दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन"** पर कार्य नहीं किया गया है।

महर्षि पतंजलि का जीवन (व्यक्तित्व)

महर्षि पतंजलि योग दर्शन के निर्माता है। उन्होंने जीवन में आध्यात्मिक साधना, योग एवं ब्रह्मचर्य को अधिक महत्व दिया। वे योग के महत्व को स्वीकार करते हैं तथा योग के द्वारा व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य दिव्य शक्ति का बोध प्राप्त करना बताते हैं। उनका विश्वास यह है कि व्यक्ति पूर्ण एवं अखण्ड चेतना को प्राप्त करे। उनको जीवन का लक्ष्य मुख्यतः योग के द्वारा परमतत्व को प्राप्त करना है।

पतंजलि मुनि की जीवनी का सही से पता नहीं चलता है किन्तु यह बात निःसन्देह सत्य है कि महर्षि पतंजलि भगवान कपिल के पश्चात् और अन्य चारों दर्शनकारों से पूर्व हुए हैं। परन्तु कछ विद्वानों ने इनका जन्म काशी में ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में विद्यमान थे। इनका जन्म गोनर्द में हुआ था पर ये काशी में नागकूप में बस गये थे। ये व्याकरणचार्य पाणिनी के शिष्य थे। काशीवासी आज भी श्रावण कृष्ण पंचमी को छोटे गुरू का बड़े गुरू का नाग लो भाई, नाग लो कहकर नाग के चित्र बाँटते हैं क्योंकि पतंजलि को शेषनाग का अवतार मानते हैं।

महर्षि पतंजलि ने संसार को दुखों का भण्डार बतलाया है और मोक्ष प्राप्त करके ही संसार के दुखों से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। यह सब अष्टांग योग का पालन करने के पश्चात् ही प्राप्त हो सकता है क्योंकि यह चित्त या मन पर नियंत्रण करता है। उन्होंने योग दर्शन में स्पष्ट किया है योगश्चित्तवृत्तिनिरोध[1] अर्थात् योग के द्वारा मन पर नियंत्रण रखा जा सकता है।

महर्षि पतंजलि ने योग को धर्म, आस्था और अंधविश्वास से परे बताया है। योग एक सीधा विज्ञान है जो व्यक्ति को जीने की कला सिखाता है।

जैसे बाहरी विज्ञान की दुनिया में आंइस्टीन का नाम सर्वोपरि है, वैसे ही भीतरी विज्ञान की दुनिया के आंइस्टीन है पतंजलि। जैसे पर्वतों में हिमालय श्रेष्ठ है, वैसे ही समस्त दर्शनों, विधियों, नीतियों, नियमों, धर्मों और व्यवस्थाओं में योग श्रेष्ठ है।

महर्षि पतंजलि की दार्शनिक विचारधारा

महर्षि पतंजलि एक सच्चे दार्शनिक ही नहीं थे बल्कि दर्शन के निर्माता भी थे। उनका अपना अलग एक दर्शन था 'योग दर्शन'।। योग दर्शन के द्वारा उन्होंने अपनी दार्शनिक विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाया। उन्होंने जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक मूल्यों व सत्यों को प्राप्त करना बतलाया है। ये आध्यात्मिक मूल्य हैं–सत्यं, शिवं एवं सुन्दरम्। महर्षि पतंजलि ने ये मूल्य सदैव अमर बतलाये हैं। और यह मूल्य हमें योग के द्वारा प्राप्त होते हैं। योग की अन्तिम अवस्था व्यक्ति को परमतत्व से मिला देती है। व्यक्ति को योग के द्वारा ही आत्मानुभूति होती है। वह स्वयं को भली प्रकार से जानने लगता है और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

महर्षि पतंजलि का शिक्षा दर्शन

महर्षि पतंजलि दार्शनिक होने के साथ–साथ एक महान व्याकरणचार्य तथा चिकित्सक भी थे। उनके शैक्षिक विचार हमें उनके तीन प्रमुख ग्रन्थों योग दर्शन, महाभाष्य व चरक संहिता से प्राप्त होते हैं। वे एक आदर्शवादी विचारक के

---

[1] महाराज, श्री स्वामी जी, : 'पातज्जलयोग प्रदीप', गीता प्रेस गोरखपुर, सं0 2048, बीसवाँ सं0, पृ0–128

साथ–साथ यथार्थवादी विचारक भी थे। उनकी शिक्षा के प्रमुख आधार आदर्शवादी व यथार्थवादी दोनों प्रकार के ह। आदर्शवादी विचारों के अन्तर्गत उनकी शिक्षा के प्रमुख आधार आध्यात्मिक साधना, योग व ब्रह्मचर्य हैं। यथार्थवादी विचारों के अन्तर्गत उन्होंने भौतिक संसार तथा मानव जीवन को भी सत्य माना है। इन्हीं विचारों ने उनके शैक्षिक विचारों को प्रभावित किया और उन्होंने शिक्षा के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। और शिक्षा की दृष्टि से मनुष्य के अन्तकरण को महत्वपूर्ण माना। उन्होंने मनुष्य के अन्तःकरण के चार पटल माने हैं–(1) चित्त, (2) मानस, (3) बुद्धि, (4) ज्ञान।

महर्षि पतंजलि के शिक्षा दर्शन के मूल आधार योग, आध्यात्मिक साधना और ब्रह्मचर्य है। उनका विश्वास था कि जिस शिक्षा में ये तीनों तत्व विद्यमान हों, उससे मानव का पूर्ण विकास किया जा सकता है। उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो मानव की अन्तर्निहित समस्त शक्तियों–बौद्धिक, शारीरिक, क्रियात्मक, नैतिक व आध्यात्मिक शक्तियों का पूर्ण विकास करे।

इस प्रकार उन्होंने अपने दर्शन के अनुकूल आध्यात्मिक उन्नति पर बल दिया और उस शिक्षा को सच्ची शिक्षा माना जो व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास में सहायक हो। वे आध्यात्मिक विकास को सर्वांगीण विकास का पर्यायवाची मानते हैं और एकांगी शिक्षा को अपूर्ण शिक्षा।

महर्षि पतंजलि ने शिक्षा के सामाजिक स्वरूप को भी स्वीकार किया है। योग के अनुसार शिक्षा एक सामाजिक अनिवार्यता है। योग एक ऐसी शिक्षा है जो ममनुष्य को विभिन्न अवस्थाओं के माध्यम से विभिन्न प्रकार के व्यवहारिक एवं सामाजिक नियमों की चेतावनी देते हैं, तथा व्यक्ति को आत्म नियन्त्रण हेतु प्रशिक्षित करके सामाजिक मूल्यों का संरक्षण करने हेतु प्रेरित करती है।

निष्कर्ष

शोध एक प्रक्रिया है, जिसका पहला चरण प्रयोजन होता है। प्रयोजन का तात्पर्य उद्देश्य से होता है? या यों कहें कि प्रयोजन क्यों का उत्तर है। इस चरणमें यह स्पष्ट किया जाता है कि वर्तमान शोध अध्ययन क्यों किया जा रहा है? वर्तमान शोध अध्ययन का प्रथम अध्याय शोध अध्ययन के प्रयोजन से सम्बन्धित है। शोध अध्ययन का नियोजन के नाम से जाना जाता है अर्थात् इस चरण में शोध अध्ययन की योजना का वर्णन होता है। जिसके द्वारा शोध के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकें। शोध का अन्तिम चरण मूल्यांकन अथवा निष्कर्ष होता है, जिसके अन्तर्गत शोध से सम्बन्धित सामान्यीकरण अथवा निष्कर्ष निकाले जाते हैं। शोध निष्कर्ष के बिना शोध अध्ययन को पूरा नहीं कहा जा सकता है।

वर्तमान अध्ययन का एकमात्र उद्दश्य महर्षि पतंजलि के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना है। महर्षि पतंजलि का शिक्षा दर्शन विभिन्न दर्शनों का अर्थात् प्राचीन वैदिक एवं वैज्ञानिकता का मिश्रण है। इन्होंने शिक्षा द्वारा समाज सुधार एवं राष्ट्रीय भावनाओं के प्रशिक्षण पर बल दिया है। महर्षि पतंजलि के शैक्षिक विचार प्राचीनता तथा नवीनता का रोचक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं तथा वर्तमान शिक्षा की गुणवत्ता के संवर्धन में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि वे ऐसी शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन करते हैं जिसके द्वारा वर्तमान परिस्थितियों के सापेक्ष उनके विचार अत्यन्त प्रभावी सिद्ध होंगें।

सहायक ग्रन्थ सूची

हुमांयू कबीर : शिक्षा का भारतीय दर्शन, बम्बई, एशिया पब्लिशिंग हाऊस

एस0 पी0 चौबे : शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाज शास्त्रीय आधार, प्रकाशक–इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ

डॉ0 रमाकान्त दुबे : विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री, प्रकाशक, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ

राम शक्ल पाण्डेय : भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2

राम शक्ल पाण्डेय : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2

राम शक्ल पाण्डेय : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय पष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2

विवेकानन्द : शिक्षा संस्कृति और समाज, प्रभात प्रकाशन, 205 चावड़ी बाजार, नई दिल्ली

रघुनाथ पाठक : आर्य समाज की उपलब्धियाँ

गिरीश पचौरी : शिक्षा सिद्धान्त, लॉयल बुक डिपो, मेरठ

गिरीश पचौरी : शिक्षा दर्शन, ओरियन्टल पब्लिशिंग हाऊस, परेड, कानपुर

एन0 आर0 स्वरूप सक्सेना : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, लायल बुक डिपो, मेरठ

रमन बिहारी लाल : शिक्षा सिद्धान्त, रस्तौगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ

सरयुप्रसाद चौबे : शिक्षा दर्शन, यूनिवर्सल पब्लिशर्स, 1003, आगरा